जैन धर्म की शिक्षाएं एवं दर्शन

भाग:-2

डॉ. कमलेश कुमार

सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

प्राचीन इतिहास विभाग

SNSRKS COLLEGE SAHARSA

जैन धर्म दर्शन या तत्व मीमांसीय विचार

जैन धर्म की शिक्षाएं में दर्शन या तत्व मीमांसीय विचार इस प्रकार है:

1. **इश्वर के बारे में जैन धर्म दर्शन**

जैन धर्म ईश्वर के अस्तित्व को नही मानता. कहीं-कहीं संदर्भ मिलता है ऐसी स्थिति में जैनी इश्वर को तीर्थंकर से नीचे मानते है.

2. **वेद के बारे में जैन धर्म विचार**

जैन धर्म वेदों के प्रभुत्व का विरोध करता है तथा उसे अपौरुषेय (इश्वर द्वारा रचित) नहीं मानता.

3. **कर्म के बारे में जैन तत्व मीमांसीय विचार**

जैनी कर्म सिद्धांत को मानते है. वे मानते है की अच्छे कर्म का अच्छा और बुरे कर्म का बुरा फल होता है.

4. **आत्मा एवं पुनर्जन्म के बारे में जैन धर्म विचार**

जैन धर्म आत्मा को मानता है तथा पुनर्जन्म को भी स्वीकार करता है. (आत्मा के संदर्भ में जैन धर्म में जीव एवं अजीव का विचार दिया गया है.)

5. **जगत विचार के बारे में**

बौद्धों की भांति जैन भी जगत का कारण प्रकृति को कहते है, न की इश्वर को. इस धर्म के अनुसार जगत प्राकृतिक नियमों से चल रहा है जिसमें उत्थान (उत्सर्पिणी) तथा पतन (अवसर्पिणी) की अवस्थाएँ आती रहती है.

6. अनेकांतवाद एवं स्यादवाद

अनेकांतवाद जैनियों का एक तत्व मीमांसीय विचार है. इसमें वे मानते है की विश्व में अनेक वस्तुएं है तथा प्रत्येक वस्तु का अनंत धर्म (गुण) है. अनेकान्तवाद वह सिद्धांत है जो सत्य के अनेक प्रकार की कसौटी को मानता है. इस रूप में जैन धर्म को बहुलवादी दर्शन कहा जाता है.

स्यादवाद अनेकान्तवाद की तरह ही ज्ञान मीमांसीय व्याख्या है. यह कहता है की सत्य निरपेक्ष नहीं होता बल्कि सापेक्ष होता है. प्रत्येक काल एवं स्थान में दृष्टिकोण भिन्नता के अनुसार सत्य के अलग-अलग रूप हो सकते है. उदाहरण - हाथी एवं अंधे की कहानी, जिसमें अलग-अलग व्यक्ति हाथी को अलग-अलग वस्तु की तरह का अनुभव करता है.

7. जैन धर्म की शिक्षाएं में मोक्ष एवं बंधन

जैन धर्म की शिक्षाएं के अनुसार अज्ञानता के कारण कर्म जीव की ओर आकर्षित होने लगता है इसे आस्रव कहते है. कर्म का जीव के साथ संयुक्त हो जाना बंधन कहलाता है. त्रिरत्नों के अनुसरण से कर्मों का जीव की ओर बहाव रुक जाता है इसे संवर कहा जाता है.

इसके बाद पहले से व्याप्त कर्म समाप्त होने लगता है इस अवस्था को निर्जरा कहते है. कर्मफल के पूर्णरूप से समाप्त होने पर मोक्ष की प्राप्ति होती है. मोक्ष के पश्चात जीव आवागमन के चक्र से छुटकारा पा लेता है तथा वह अनंत ज्ञान, अमृत दर्शन, अनंत वीर्य तथा अनंत वीर्य तथा अनंत सुख की प्राप्ति कर लेता है. जैन ग्रन्थ मे इसे अनंत चतुन्न्य कहते है.